

DPN 6066

Title : कालिका पुराण KALIKĀ PURĀṆA

Run. No. 6757

Cat. No. 82

Micro. No.

Subject कालिका पुराण

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 41.5 x 9.2 Folios ¹⁻²⁵ ~~23~~ Lines (in a page) 8

Compl. / Incompl.

(missing 4, 16)
Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

पशुपतिमान प्रभाय
Pasupaman prabhaya

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
१ अं. तमः चण्डिकायै ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ८ ॥ यद्योगिमि अथ मयार्तिं विनयायोग्यं मासाय
वन्दितमतीव विविक्तं चित्तैः ॥

→ इति श्रीकालिका पुराणे हरसती कीडा चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

1016 14/10/46

गया निनः निरुद्धि यावत्तं यथा गिनयिषु वीहिम ॥ मार्क (उयडवाच ॥ इति प्रस्तावता सर्व मदनं मवि विरुक्तं य विवार्थ यथा कामा सुकृष्टं पुता निजां कृति ॥ तस्मी वरु विरुद्धं अ विरुद्धं मनिपू
 नवा ॥ माहृत्य अथ राव अ ततय ॥ भलिना यत ॥ नेया जाया सतन या नि ॥ समीहां सदेवत ॥ न्या सिना यिमहा त्मान सर्वत ॥ नृद्विना स ॥ अता वक्रा यून स ॥ माहा ली मवना यव ॥ गदि दुया गनि जाया ॥ सम्य
 क सम्य यव क ॥ ॥ वक्रा वाच ॥ अथ कय क नृय व नउ सुख तमा युले ॥ विरुद्ध यार्थ क नृय विरुमा यति सा यत ॥ या नि स्वा ॥ सुसा धसा ऊ गदक कया लत ॥ विरुद्ध य नृय याति या ग नि डति सा यत ॥ स
 कुन कुविं यवा प्रान नृति गी यत ॥ या गिनी सुख विडा क ॥ सा नि गे या ऊ ग न मयी ॥ गरु कि ड म सी य वी ॥ धवि तं सु ति मा नृते ॥ उत्य नृन नृदि तं क नृय या नि न क नी ॥ दृढा रि य वृ ज या क सी सा नृय नि या अच ॥ अ
 हाना दोता माहं मम ली कान स गयी ॥ का अ यवा ॥ धला र वृ कि या कि या यून ॥ यून ॥ यथा काम नि या अउ विना युक मरु विनी ॥ अमा दय कं य स ना सता ऊ नृ क य ति या ॥ महाम ये गि सा धा का र न मा ऊ ग दी
 यवी ॥ अहं का य दि स सी स नृ सु छि य रु व रु विनी ॥ उत्य कि वि ति लो के ॥ सा क थ ग ॥ न नृ यि वी ॥ उत्य नृम क नृ वी ॥ अथ या म य सी रु वा ॥ यवा ह य ति सा क क क ॥ अत्य नृय वा ह यत ॥ सा ग कि ॥ स छि नृया व
 स व यी सा ति यी विनी ॥ कमा क मा व ती नि र्थ ॥ क नृ व सा द या व ती ॥ निर्या सा निर्य नृय व ॥ ऊ ग नृ हं य का गत ॥ अति ॥ स्व नृय व यून ॥ यका य क य का गिनी ॥ या गिनी मू कि रु उ ॥ सा विद्या नृय व वे वी ॥ सी सा नि क नी सी
 सा न व ध हं दु वि य यी ल श्री नृय व व ह नृ दि ती या य मा रु वा ॥ ययी नृय व क क रु स द म म म नी रु वा ॥ सर्व य स ॥ सर्व म दि य मू कि वि र्या द वी ॥ सर्व नृया य ना र्था ॥ रुद्रा दी नां सर्व द मा रु य पी सा श्री नृय व

सर्व जना ॥ समकता ॥ ॥ इति श्री कालिकायना (महामाया) चराव ॥ अथ ॥ अथ ॥ ॥ मार्क (उयडवाच ॥ अथ वक्रा महामाया स्व नृय यति या यवा मदना यून ॥ या ह यत्ना मा रु न मा रु न ॥ ॥
 वक्रा वाच ॥ विरुमा यो म हा यवा यथा दान य विरु ॥ क विरु ति तथ क र्त्त म डी कार् य नृवा क ना ॥ सा न म्या द क त न या रु ता ग रु म हा त न ॥ रु विरु ति दि ती य ति स्व य म वा व द ल्प यी ॥ त्व म र ॥ ॥ स ग वि ॥ सा ड ॥ न
 ला व म धु मा स ड ॥ या थ क ति तथ दान नृ हं क नृ नृ क नी ॥ ग ह्यो रु हा त दा व रु क ता क ला व र्थ स म ॥ अ वि वि चा य वा रु छि इ विरु ति न सी ग य ॥ ॥ मार्क (उयडवाच ॥ अथ वक्रा द्विज ॥ अथ लो क ग य म न
 रु व ॥ म धु र्थ य क र्ता न म हा य व स्य मा रु न ॥ ॥ मदन उवाच ॥ अथ वक्रा यथा सा कि ॥ किय ता रु न मा रु न ॥ यत्न क वा य वा द वा त स्य त नृय मा म ॥ यदा स मा धि मा यि त स्ति ॥ ग मु दि य रु ति ग ॥ तदा स ग वि व
 त न गी तु ल न ॥ वि ना ॥ त्मा ऊ या मि लो क ग नि र्थ मा रु न का वि आ ॥ स्व ग य का सु थ य ध स मा दाय ग वा स नी ॥ उ मा मि त स्य स वि ध मा ह यं क रु न न र्ही सि ड्ढ द न न रु न य न म या मि दि वा नि नी ॥ रा वा रु वा य
 त स व य वि ग नि च त य व ॥ म यि य वि र्थ स वि ध ग रु ॥ या र्थ यि ता म रु ॥ का वा न क नृ न स वी ॥ रा वी त नृ म ड्ढ मू ड ॥ म म य व ग मा पु र ॥ सु स्वा ॥ स्य ॥ सर्व ज न व ॥ न ग रु नृ व य स स्य मा न सी वि कि र्थ ग ती ॥
 यथा दि म व त ॥ य क स मा य य म थ धि य ॥ त य ग ना त दे वा हं स व ति ॥ स म धु र्थ ॥ य द म क य या रु व य द वा ना रु क य ॥ के ला सी वा य द या ति त दा ग रु म रु न रु ॥ य द य क स मा धि रु ह व रु रु
 ति व क दी ॥ त त स्य यून य क मि थु न मा रु या म रु ॥ त व क य ग ल व न रा व हा व य र्थ मू ड ॥ ना ना रा व न क र्ता दा य त य क म मू रु म ॥ नी ल क रु म यि मू ड ॥ स रु स व ग ॥ य यी सी मा रु या मि स वि ध म

त्वमद्यका तथा निर्दिष्टं नृपिणा ॥ त्वं कालं वापि त्वं भक्तं त्वमद्यकृतिः ॥ यस्याः ॥ सीमा न ला कनी यविजायय यदि विषयं नृपिणातिभयया रुषीरुस्यनिकयवी ॥ पसीदरुगवस्य ॥ यसीदनिव नृपिणि ॥ यसी
 दोधा नृप्या त्वं जगन्मयि नमो भुत ॥ ॥ मार्क ॥ ७५ उवाच ॥ इति मुतामहमाया दक्षेन युयतात्मना उवाच दक्षेन त्वं स्वयं तस्य मिर्दिता ॥ ॥ श्रीरुगवस्य ॥ ॥ रुद्रादं दक्षेन वराः सहस्राननया
 रुणी ॥ वरं वरं यया रीष्टं यरुदास्यमिह त्वयि ॥ नियमनतया रिक्तं मुनिरिष्यय जायते ॥ अनी वरुदास्यं वरं वरं यवा ॥ ॥ ॥ दक्ष उवाच ॥ जगन्मयि मेहमायं यदि त्वं वरं दामस ॥ तदाममसं ता रुद्रा
 हवजायारुवाधुना ॥ ममेव न वरादवि कवलं जगतामयि ॥ लोकं गत्य तथा विष्णुः निवस्य यत्र मेधवि ॥ ॥ श्रीरुगवस्य ॥ ॥ अहं तव सुता रुद्रा त्वं ज्ञायायां समुद्रवा ॥ हवजायारु विष्णुमि न विवाहं युजायते
 गदारुवा नमयि पुनर्द्विन्मन्दाद नमः ॥ दहं त्यक्तमि स यदि सै मखेन युजायते ॥ अथ दक्षेन वरं ॥ यति सै मखेन युजायते ॥ अहं तव सुता रुद्रा रु विष्णुमिह वयि ॥ तथा सीमा रु विष्णुमि मरुद वरं युजायते ॥
 यति सै मखेन युजायते ॥ सै युजायति निगकल ॥ ॥ मार्क ॥ ७५ उवाच ॥ अवमूक्तामहमाया दक्षेन युजायति ॥ अहं तव सुता रुद्रा सै मखेन युजायते ॥ अहं तव सुता रुद्रा सै मखेन युजायते ॥ अहं तव सुता रुद्रा सै मखेन युजायते ॥
 गमलेन समुद्रं रु विष्णुमि सुतमि ॥ अथ वरं युजायते ॥ विना सै मखेन युजायते ॥ सै कत्यार्थं रुद्रा वार्थं मन्सा विनन न च ॥ तयत न च युजायते ॥ वरुदास्यं रुद्रा सै मखेन युजायते ॥ तना वरा दक्षेन ॥ अमनिय वि विमिमी
 पुनः पुनः सुताय न तस्य जातः ॥ सहस्रं ॥ तं सै मखेन युजायते ॥ ययुर्न वरा कृता ॥ यथि यति सु कर्ता ॥ ययुर्न सै मखेन युजायते ॥ ययुर्न सै मखेन युजायते ॥ ययुर्न सै मखेन युजायते ॥
 दिता दक्षेन युजायते ॥ अथ यति न विवर्तक ॥ अमनः ॥ यथि विमिमी ॥ ततः ॥ समुद्रा दयि ॥ यजायते ॥ ययुर्न सै मखेन युजायते ॥ ययुर्न सै मखेन युजायते ॥ ययुर्न सै मखेन युजायते ॥ ययुर्न सै मखेन युजायते ॥

स्यां युधमसै कल्या यदा रुद्रा युजायते ॥ स्यां जातः सुता जातः तदा तस्यां द्विजारुमा ॥ तस्यां युजायते मायायां सूचीता सौ युजायति ॥ सै वेधति तदा मनः तां दक्षेन युजायते ॥ वरुदास्यं रुद्रा सै मखेन युजायते ॥
 मया अथ वरं युजायते ॥ दिना ॥ अहं रुद्रा तस्यां जातः या अथ समुद्रा ॥ अथ वरं युजायते ॥ अथ वरं युजायते ॥ अथ वरं युजायते ॥ अथ वरं युजायते ॥ अथ वरं युजायते ॥ अथ वरं युजायते ॥
 गदीयवी ॥ विष्णुमायां महामायां तावयामास रुद्रा जित ॥ ॥ दक्ष उवाच ॥ निवाहं काम रुद्रायां यागनिजा जगन्मयी ॥ यायायत विष्णु नेव तावमामि सनातनी ॥ यया धाता ययुः सृष्टानियु
 क्ता ययुः कर्ता ॥ स्मृतिश्च विष्णुः कर्ता सन्निधौ गङ्गा गत्य तिष्ठति ॥ गङ्गा नैव मरुदवी तावमामि महीयसी ॥ विभाव नहितां रुद्रा मयमयां यमावती ॥ यमावती मयमयां यमावती ॥ यमावती मयमयां यमावती ॥
 यमावती मयमयां यमावती ॥ यमावती मयमयां यमावती ॥ यमावती मयमयां यमावती ॥ यमावती मयमयां यमावती ॥ यमावती मयमयां यमावती ॥ यमावती मयमयां यमावती ॥ यमावती मयमयां यमावती ॥
 यागनिर्द महामाये विष्णुमाय जगन्मयी ॥ यायमायत सै यत्रा यत्र न सातवात्मिका ॥ ययुर्वनिज गुणी तं रुद्रा मखेन युजायते ॥ जगन्मयति मायति सै वरं यति रुद्रा विष्णुमि ॥ ॥ मार्क ॥ ७५ उवा
 च ॥ इति मुतामहमाया दक्षेन युजायते ॥ तस्यां वरा दक्षेन ॥ सै मखेन युजायते ॥ सै मखेन युजायते ॥ सै मखेन युजायते ॥ सै मखेन युजायते ॥ सै मखेन युजायते ॥ सै मखेन युजायते ॥
 रुगवस्य ॥ अहं माना धिता पूर्व ॥ यदर्थं मुनि स रुमा ॥ सकलं तव सुद्वन दवधाय सै यति ॥ ॥ मार्क ॥ ७५ उवाच ॥ अवमूक्तामहमाया दक्षेन युजायते ॥ अहं माना धिता पूर्व ॥

[illegible][illegible]

सकागस्ययुजायकशसाविधीवीक्षसत्यमु विप्रयागभवईतातेसमारायलाकगःकृतकया मूदायूतः॥ इदंजगदुगनीहितंयथैवधुई॥ ॥ब्रह्मावाच॥यदात्तरुगवत्तगः॥ नद्विधैरुसनि
 धिर्गं नाहीवरवतः॥साथं समाधिद्वयवधु॥ सुगः॥ उर्यदकथ स्वयमेवयुदास्यति॥ अहंवापिदिशामि तद्वर्कं तस्मिन्कृतः॥ ॥मार्कः॥युयुताव॥ इत्युदीर्यमहादर्ववृक्षालाकयितामहः॥ जगमद
 कनित्यं स्यन्नननयुवगिना॥ अथदकपिद्वलनं सर्वं प्रत्वासीमखा॥ चिकया मासदययं मत्तूताग हवेकथं॥ आगतोयिमहादवः॥ यस्मिन्सजगमहः॥ पुनववकथंसायि सुता॥ थंउत्तुयुयुगशयसुय
 यिमयातस्य तानिकममः॥ नेतयाग्रनिद्वया यथनी विरुलात्मेना॥ अथहंयुयुयामि तमेववृषरुधेडी॥ यदीयतनयारुलं स्वयमेवयथावृते॥ यथेवयुजितः॥ सायि वाश्चत्यतिययत्तः॥
 नीउर्यवदुमहर्कं सुवीदलंउतनतः॥ इतिचिकयातस्य दकस्ययुनताविधिः॥ उपस्तिताहंसनथः॥ सावित्री सहित सुदा॥ तं दृष्ट्वावेधसंद दः॥ यवम्यावेनतः॥ स्मिताः॥ आसनेअददी तमे सैवराधय
 थायिती॥ ततस्मैसर्वलोकं॥ तयागमनेकावनी॥ दकः॥ यथवृथियुयुयिकविश्रयि हसितः॥ ॥दकउवाच॥ तवागमनेरुईकथं यस्वजगद्गु॥ पूयमहाकायविश्वं दधवागममागतः॥ ॥मार्कः॥
 यउवाच॥ इतिपुष्टः॥ सुवः॥ दकधसुमहात्मना॥ पदसन्नववीक्षकं भादयसुयुजायति॥ ॥ब्रह्मावाच॥ अथदकयदर्थकं समीयमेहमागतः॥ तश्चाकस्यहितंयथैव रुवतायितादीयिती॥ तवपूजा
 समावाधं महादर्वजगत्याती॥ आवनः॥ यायिताः॥ साधे स्वयमेवागताः॥ गृहं॥ नीउनातवयुः॥ यथैवत्सकागमहंयुनः॥ यस्मिन्निमित्तंयत्कृतं॥ ययत्तमेवयथावृ॥ वरंदाहंसमायागा यावत्पुरुतिनीकवृत्त

१७

दानद्वकलातथा॥ जगमरुषवत्तवः॥ तनायियविदीयितः॥ ततः॥ कः॥ नवलिन वलीवर्धनवगिना॥ सब्रह्मनायदायेथ पायदकालयैरुनः॥ ततादकामहागजा अत्युत्तयस्वर्यहरी॥ ब्रह्मा
 दीथददीगवा मासनमित्यथायिती॥ कवायथायिती॥ तया॥ यूजां चक्षुदिकि सुथा॥ वकात्रसिचिदंदका मूनिहिर्ममिसेः॥ मरु॥ ततः॥ गुरुमूहर्कं व लः॥ पुवदिजसुरुमाः॥ सुगीनिजसुगीदकाद
 दीहर्षवमीरुव॥ उद्यादविधिनसायि यालीउअहहसितः॥ दाकायिआववतना सुदानीवृषरुधेडी॥ ब्रह्माधनायदायाथ मूनयः॥ सामगीतिलिः॥ अचायजः॥ इः॥ सुयायेस्वायामासनी ग्वरी॥ वाडी
 वकुर्नवः॥ सवै ननुतुअयनामः॥ पूयवृष्टिः॥ ससुहर्माद्यागगवासीगताः॥ रुविः॥ गमुमथागलयगनुठनाहिवगिना॥ साईकमलयोदवमूवावगनुठधेडी॥ ॥गीरुगवानुवाच॥ सिधुनीलीउ
 नः॥ आमः॥ गारुयागारुसुहवो दाकायिआयथावाहं यतिलाभनयथाया॥ कत्रधममयासाई नदीदवस्यवानुगी॥ अनयासहसंसात्र यायिआमहर्लसदा॥ पदहमनसीवीत्या यसन्नवदनादि
 जाः॥ अथवृकातकादका दकजाचिपूलासिनी॥ सुनाविषमनावकुं वीकीचकतदीयकं॥ सुहर्मा सुदावका यथानिस्मसतीमुखी तदंदिशविकात्रः॥ याकवानकामतः॥ पुनः॥ अथतस्यययातागु
 तजाः॥ रमीदिजाहमाः॥ तजुलंदहनातामी मूनीनीयुवतसुदा॥ तस्मिन्मास्मरुवंस्वायः॥ ततः॥ रमीयुताः॥ सैवर्कधकथावर्कः॥ युक्ताः॥ दाववव॥ गहुनः॥ अथमेअककायानिद्विजसुरुमाः॥ तेसु
 सीकादितायमि तयुगहुंस्मृगकनः॥ येअनुदाकायनीदवी॥ रुगीकोमेनमादिगः॥ माहिता यथकाभेन तदाविष्कवः॥ सन्नः॥ ॥येवहनुवकावी॥ तस्मिन्मयगकनः॥ गमुनायमिगुलविधि

[illegible][illegible]

॥ अलिप्तयति पादने ॥ ॥ रुगवानुवाच ॥ ॥ दैतमा मयं सर्व मासीद्वनवर्जितं । अथ क्वा मलं च यस्मिन्मिव सर्वतः । नदिवा नलिता वा । नाका नीन च काश्चयी । न अति न
 जलवा यूनो वा किं वनसंस्थितं । एकमासीत्येव वदन् सर्वं नित्यमपीदृशं । अथ क्वा नन्यत्र द्वे तद्विना विनाशनी । यद्वक्तिः प्रयुज्यते विनाशनी दी सर्वसंस्थितं ॥ स्मृतः ॥ कालाधिपतिः जग
 त्पतमकं । यदेकं वनं वदन् यत्र नृपयवर्जितं ॥ नृपयमिदं नित्यं तस्यैव जगतां यतः ॥ काला नामा यत्र नृपय ना मायककुका नवी ॥ सर्वेषामेव रहतां मवचनसंगतं ॥ ततस्तस्य
 काशनं तस्मिन् नृपयकाशतः ॥ यत्रासु सार्थमकुलं कारयत्यकस्मिन् । संज्ञायानुधुक्ता मरुत्तमजायत । मरुत्तवाकतः यथा दहं कप सुधा रवतः ॥ अहं कपतु संजातं गदत
 नाउ उल्लिख्य ॥ आकाशमसु उदिकु वनं विधुवर्जितं । ततस्तु वसतमाया दायः ॥ सुहृमरुत्तवः ॥ निवाधनाः स्वयं दधु ता सु दानि उ मायया । ततो द्विष्टु गसाधन संस्थितं यद्वक्ति वि
 तुः ॥ पुनः ॥ संज्ञायामास सुहृथयमवधु ॥ ततः ॥ सत्युक्ति स्मात्वा वाडं वि तु वरा वयतः ॥ अयमसंज्ञायामास जगदीडं निवाकली । तद्विद्वं कम विव ॥ ममक मरुत्तमदेतः ॥ जगत्तयः
 समस्ता गाई उवाच मुक्ता ॥ अथ स्मिता मरु मा उ गद्विद्वं सुदमुक्ता ॥ तथैव मायया दधु वस्मा उ मेतुलीयनः ॥ वापि धवद्विष्टि विव वायु रिक्तरसा तथा ॥ विष्टु दधु कं कर्तुं सर्वया
 समवतः ॥ सप्तसागरमानेन तथा मरुदिमानतः । वस्मा अथ कर्तुं य तदन्यरु वदिः कर्ता । तदुल्लयमवासी विष्टु वस्म नृपयक । दववर्षमृष्टि विव उ विरुदा दधु कं

तस्या नृवता नं नृपय त्वास्मि मरुत्तवः । उवाच ॥ यद्वता दताः ॥ सुमूढाः ॥ सयत कृता ॥ तन्नाथ गन्धतमाया त्विष्टि समजायत । वायु सुहृ गतमाया त्वरुत्ता विनियोजिता ॥ वरुत्तमवर्तता
 नी धावतः ॥ समकतः ॥ अद्विष्टु कर्ता विष्टुले वायु रिक्तरसा तथा ॥ अतर्विष्टु दधु कं यद्वमन्यरु गद्विगीता ॥ वस्मा गनीवतु विष्टु वकं मरुत्तवः ॥ यथानेकावभा कर्ता विष्टु विष्टुली कर्ता
 तद्विष्टु गः ॥ संज्ञा ॥ यथैव कुष्ठु कुष्ठु ॥ यद्वकं नृपय ना ॥ ना ॥ काया वा मरुत्तवः ॥ तन्नाथ गान्धी ला ॥ एकवकुष्ठु कुष्ठु ॥ गीखवकुष्ठु गदायत्र पात्रिकायः ॥ सवैवकुष्ठु ॥ अरुवरु
 दधु ॥ गः ॥ यथैव कुष्ठु कुष्ठु ॥ सुहृ कयसमः ॥ कः ॥ स काय प्रदु ॥ गवः ॥ ययसुता वस्मा काय सुहृ गद्विष्टु या उयतु ॥ अयमका रुवत्तुष्टु ॥ वस्म नृपय गला करुतः ॥ स्मिति गद्विष्टु
 माया यद्वत्ता स्या चया उयतु ॥ ततस्मिन् गनीवतु स्वयमवयकाशतः ॥ ज्ञाननृपय व अति जनादिर्गवानु यतु ॥ सुहृ स्मिन् कनका दव उवमरुत्तवः ॥ वस्मा विष्टु गीव ॥ अति संज्ञा मा
 ययथ कयथक ॥ अतर्विष्टु गीव तथा मयि ना कयक ॥ एकं गनीव नृपय अ ज्ञानमस्माकमकर्तुं ॥ ॥ मार्क ॥ उवाच ॥ ॥ अति धृत्वा वचसु स विष्टु वमिता गउसः ॥ रुधा कृत्तु मयः ॥ य
 वयन नैव जनाईनी ॥ ॥ ॥ अथ उवाच ॥ एक उवमरुत्तवः ॥ अति नृपय निव अ नः ॥ कावा माया थ कः ॥ कालः ॥ कावा यद्विष्टु नृपय ॥ कयमसंज्ञा गीव ना विष्टु वत्तु थ मे कता । तन्मवदसु
 ॥ मविदु तत्तु रवीयथा गथं ॥ ॥ रुगवानुवाच ॥ त्वमेव यथैव सदा ध्यानं ॥ यत्र मवधु ॥ आत्मना या त्मनूयतु ॥ अति नृपय सदा कर्तुं ॥ माया अ यद्विष्टु ज्ञानं प्रयुज्यते स्वयं विष्टु ॥ ज्ञाना रुष्टु

नया गन तस्माद्धानयनारुवा ॥ मायया माहिता यस्मा दधुना त्वं मदीयया ॥ तगादिस्मृत्ययनमं अतिरिचिनिगानतः ॥ अथनाकाययूकस्त्वं विस्मृत्या नानमात्मनि ॥ मायकृतिमकृत्वा दिव्यानि
धमथाश्रित्य ॥ ॥ मार्क ७७ ये उवाच ॥ तस्मै उमरुदवः ॥ अथावाच सृनिश्चितं ॥ मनीनां यथायाग यकाश्चानयनारुवत ॥ आसा अवर्चययं कं निमीलितविलाचनः ॥ आत्मानं चिक्रयामास त
दात्मनि मरुदवः ॥ यनं चिक्रयस्मृत्य गनीनं विवरीयुनः ॥ तज्जालि नृकुलं दह्यं न गच्छन्मनयस्मृत्य ॥ तत्त्वज्ञानयूकस्त्वं गच्छुः स विष्णुमायया ॥ यदित्येकापि विवरीतयस्मृजालि नृकुलं यय
गच्छ ॥ सदा तस्मै सवया गच्छना किक ॥ नतपिवीक्षिहं ॥ गच्छ ॥ गच्छेत्वादिवाक्यं ॥ स्वयमेव तदा विष्णुः समाधि मनसा रूपा ॥ यदिवेग गनीना नृजीनय वधूः ॥ यदिविष्णुतस्य ज ० न यथास्मृष्टिक
मः ॥ यना ॥ तथेव दर्शयामास स्वयं नायाय ॥ अथयः ॥ नच्छलेन च स्मृत्वा न विगच्छत ॥ तत्त्वं ॥ नित्यानन्दमिवानन्दमकीं शुद्धमतीन्द्रियं ॥ अदृष्टं सर्वदृष्टानं निर्गुणं यनमं यदी ॥ यनमात्मा
नमानसं ॥ जगत्कान्तकावरी ॥ यथमं दद ॥ गच्छ ॥ नास्मा नैतत्त्वं च यदी ॥ गच्छ ॥ यदिविष्णुमनसा सवदिक्षीमवर्जितः ॥ तस्यैव नृयय कृतिः ॥ सुखाथकिन्नतां गती ॥ ददर्शनस्यैवास्यासं पृथक्क
तामिवेक्षिणी ॥ पुनः ॥ ददर्शो सो यथेव सागनस्ततः ॥ अथमिव कलः ॥ सुला ॥ ददर्शो द्विजसलमा ॥ गच्छ ॥ दवकाल नृयय ॥ गच्छ ॥ तस्मै ॥ सुष्टिस्त्रिभुवनयोगना मवर्कदस्य कानवीय
कृतिः ॥ पुनः ॥ येन काला यिचमूद्रमूद्रः ॥ अरिर्नरायमावीय सार्ज्जथेतिवताकृतान ॥ यथकृतानरिर्नाथ ॥ ददर्शनस्यैवास्यासं पृथक्क ॥ एकपकाद्ययवन्न नरुनानास्ति किञ्चन ॥ सयधानस्य

[illegible]

हसद्वमनूहो ॥ स्वयंकृपातद्वृत्तापयीविधितिदर्शकशतयेव सर्वदिकाला दालेयालाष्टुत्रकाशउयतम् ॥ स्वयंदवीधनाखव ॥ गनूनयानिउचकत्रयगतसरुसुश ॥ ह
 रुविषाग्रहक्षयागुतस्मिन्महामहामव ॥ जूलियासुमनीशायाधविनेकेकाविषाशसर्वगुवमिधन्याकालयामासुनर्विष ॥ सफर्यय ॥ समागर्थकवैकिमयुथकयुथका ॥ गी ॥ योदिग
 ॥ स्वयंयुनयक ॥ यतिस्वने ॥ नवृगातयथागुदहनगुमहात्मना ॥ तद्विद्वयथादवानमनूयानयद्विषाशनादिउाननृवीवायि यगवानमृगसुथा ॥ गन्धर्वविशोधनेसिद्धमेद्यानादित्य
 माधर्विगधनसयकान ॥ मंसुत्रवायागवनासमस्तवृद्धमदक ॥ सुमहाधनस ॥ कलमन्त्रकनयुगवयमासदिवानि ॥ कलाकाशानिमयाश्रावृगा ॥ सध्वसमागता ॥ मया ॥ सलोला
 ॥ मनदीसमुद्रा ॥ सर्वासिवायुधुवृतागता ॥ सर्वसुगर्भीरुविषाडि युद्धवश ॥ कर्णयुजगुह्ययज्ञितम् ॥ यातालंगावावसूधमदावा ॥ गतास्त्रियादवधना ॥ समस्त ॥ उगद्वस्त्रिय
 किंविचततायतनंमृनि ॥ सर्वरुत्वासमावश ॥ यज्ञसर्वस्वदक्षिण ॥ तस्मिन्महामहाम ॥ सुवृद्धनमहात्मना ॥ कयालीतिविनिधित्यतस्ययज्ञहितानदि ॥ कयालितायतिमदीदयिग
 यिनिजासता ॥ नादगायकविषयदक्षदक्षदक्षिण ॥ धृत्वासतीतथायज्ञतातनावपुमूलम् ॥ कयालितायतिवृत्तानादमित्यतितद्व ॥ उच्चैर्कायदकाय ॥ नकनगानतातदा
 ॥ ॥ यतदर्थं दक्षैव मनश्चकतदासती ॥ कायविशायिसापूर्वसमयंयुगवत्ययि ॥ मनसगिद्विनिधित्यनमगायतदासती ॥ जूलिगायनमपूर्वसूद ॥ समय ॥ कृता ॥ ॥ श्री

25